अपना विकास अपने हाथ अर्थात् स्वावलम्बी विकास

कृषको की आय दुगनी करने हेतु तकनीक परक माड्यूल

प्रसार निदेशालय

च0शे0आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

कृषको की आय दुगनी करने हेतु तकनीक परक सुझाव

किसानो की आय दुगनी करने हेतु विभिन्न कृषि परिस्थिति के कृषको को ध्यान रखकर आयपरक रणनीति तय करनी चाहिये।

1. उच्च संसाधन एवं सामान्य भूमि के कृषक।
2. निम्न संसाधन एवं सामान्य भूमि के कृषक।
3. वर्षा आधारित खेती के कृषक।
4. शहर (बाजार) के नजदीक के कृषक।
5. सुदूर अति पिछडे क्षेत्र के कृषक।
6. ऊसर एवं बीहड़ समस्या क्षेत्र के कृषक।

खेती की "आय दुगनी" करने हेतु खेती के दो चरणो के प्रबन्धन को जानना होगा।

1. बुवाई रोपाई से फसल कटने तक (कम लागत से उच्च एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन प्राप्त करना)
2. कटाई मड़ाई के बाद (प्राप्त उत्पादन से उच्च आय प्राप्त करना)

अ. बुवाई रोपाई से फसल कटने तक
(कम लागत अधिक आय प्राप्त करने के प्रबन्धन)

1. बुवाई/रोपाई करने फसल कटने तक लागत कम करने की तकनीकी व प्रबन्धन।
2. मृदा स्वास्थ्य हेतु कम्पोस्ट बनाने एवं प्रयोग हरी खाद मिलाना।
3. बीज स्वावलम्बन । (बीज खेत तकनीक)
4. कम लागत का उर्वरक उपयोग (मृदा नमूना के आधार पर एवं ,नीम कोटेड यूरिया)
5. सिंचाई क्रम व विधि :—
    - धान की खेती पानी में नही नमी में करने की तकनीकी।
    - सिंचाई नाली में नही पाइप से करने का प्रबन्धन।
    - स्प्रिंकलर एवं ड्रिप सिंचाई क्रांतिक अवस्था पर सिंचाई।

ब. फसल कटने से बिक्री तक का प्रबन्धन एवं तकनीकी

1. उत्पादन विधायन प्रबन्धन (अ) सुखाई, (ब) सफाई, (स) ग्रेडिन्ग ।
2. गुणवत्ता बढाना।
3. बाजार प्रबन्धन :–
   - बाजार गॉव में ही हो।
   - गॉव से बाजार सामूहिक (FPOs द्वारा) एवं सामाजिक प्रबन्धन से।
   - स्थानीय, विशेष व बाहरी बाजार।
   - निर्यात प्रबन्धन।
4. जोखिम कम करना (प्रधानमंत्री फसल बीमा)।
5. स्वपूरक खेती –गृहस्थी में कम से कम खरीद व बिक्री अधिक का प्रबन्धन (सब कुछ खेत सें)

कार्य योजना– खरीफ , रबी, जायद तीनों मौसम में निवेश प्रबन्धन, कम लागत की जानकारी उत्पादन तथा लाभकारी बिक्री की कार्य योजना लागू कराने की आवश्यकता है।

वर्षा आधारित खेती हेतु सफल प्रबन्धन (जल, प्रजाति, जीवांश प्रयोग प्रबन्धन की 8– तकनीक)

जल संरक्षण प्रबन्धन (मोटी मेड़, छोटे खेत)

बीज खेत तकनीक (खेत जो चाहे वही प्रजाति)

पूंजी स्वावलम्बन (बचत खर्च का सही अनुपात)

नमी संरक्षण (हाथ में खुरपी, कांध कुदाल)

फसल सुरक्षा (खेत, खलिहान, भण्डार कीट मुक्त)

पोषण सुरक्षा (पोषक थाली, स्वास्थ्य आधार)

भूमि स्वास्थ्य संतुलन (खेत चाहे पकी कम्पोस्ट)

पशु प्रबन्धन (कम पालो, उन्नत पालो)

रोपो नीम, पालो गाय
कम लागत, अधिक आय